Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi DuSN 2

13. D. 32.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Jalajhūland.

Jalphoolan

जलफूलन

श्रीमत् सीतारामचन्द चरण कमलके भ्रमर
श्रीमहाराज कुमार रसिक रामकिशोर शर-
ण बाबू नन्दकिशोर दुबे रचित

जिस में

श्री लड़ैतीलाल जनक नन्दिनी दशरथ राजकुमार
परम रस खान के जलफूलन की लीला वर्णन है
भक्त जनों के आनन्द विलास हेत

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में शुद्धता पूर्वक छपा

जूलाई सन १८७९ ई०

बतज़वीज़ श्रीबाबू नन्दकिशोर दुबेके ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ जलभूलन

वस्तु निर्देशात्मक

मंगलम् ॥

॥ श्री आनन्दकंद सिय रघुनन्दनाय नमः ॥ ऐलाछंद ॥ सिद्धि जयति श्री जनक नन्दिनी वर रघुनन्दन ॥ नाम रूपलीला सुधाम अनुपम छवि बन्दन ॥ जयति भरत श्रीलाल लषण वरजयति शत्रुहन ॥ जै केशरी किशोर चारुशीलादि सख्य गन ॥ १ ॥ जय सहजा सुभगादि सहचरी प्रभा प्रकाशी ॥ जय प्रिय राज कुमारि सिद्धि आदिक रति राशी ॥ जय परिकर जय अवध जयति श्री अवध निवासी ॥ जय गणपति शिव शिवा ब्रह्म सरस्वती प्रकासी ॥ २ ॥ जय वशिष्ठ मुनि आदि सिद्धि श्रीराम दास गुर ॥ जयति जानकी दास रसिक तपपुञ्ज महीसुर ॥ सन्त जयति करुणा अनन्त जै चारि खानकर ॥ मो हिय सिय पिय दसहि नित्य बर देहु कृपाकर ॥ ३ ॥ फल निर्देशात्मक मंगल ॥ जयति लषण अभिराम काम छबि धाममनोहर ॥ सखन शिरोमणि रसिक राम बल्लभ हरानोहर ॥ करुणा निधि सरकार पतित पावन अघताये ॥ आयो अघ शिरताज आज हरि विरद सम्हारो ॥ ४ ॥

पद पंकज अनकूल सदा रुजमूल निकन्दन ॥ वि-
नवों दीन अधीन बसहिं उरपुर रघुनन्दन ॥ शोभा
छवि सुखधाम भरत श्री लषण शत्रुहन ॥ रामचन्द्र
मुखचन्द्र तृषित करिये आनंद घन ॥ ५ ॥ दोहा ॥
आप नाथ निष्काम प्रिय मैं सकाम सरनाम ॥ समु-
झि विरद गुनि आपनो करगहि लीजिय राम ॥१॥
सबहिं नचावत खवस करि लिये आपकरतार ॥ मेरी
सब मनसा करो पूरी प्राण अधार ॥ २ ॥ तारे पतित
अनेक प्रभु मो सम मिलो न एक ॥ कलिमल रुजहरि
हरि मिलो गुनो विरद बर टेक ॥ ३ ॥ सुनत टेर गज
द्रोपदी लिय प्रह्लाद निबेर ॥ मेरी भारी अरज सुनि
कहाँ लगाई बेर ॥ ४ ॥ प्रभु गतरो कहाय अब कासों
गाओं जाय ॥ हरि कलेश रुज दूरिकरि सब सुख
देहु मिलाय ॥ ५ ॥ श्री हनुमत गुरु कृपा निधि
विश्वनाथ अवतार ॥ उर संपुट सियपिय बसैं द-
या दृष्टि करतार ॥ ६ ॥ उमा शम्भु करुणा अयन
त्रिभुवन यश परिपूरि ॥ सियाराम उरपुर बसैं करहु
दूरि दुख मूरि ॥ ७ ॥ विश्वनाथ दायाअगम लीजै
हरि दुख फन्द ॥ नन्द किशोर चकोर इव लखेराम
मुखचन्द ॥ ८ ॥ अति आरत बिनवों बहुरि जिनहिं
रामपद नेह ॥ कछु बिहार बरणान करों परिपूरित
करि देहु ॥ ९ ॥ बीज मधुर ध्वनि सरसगुन हावभा-
व अनुकूल ॥ रसिक शिरोमणि आदरहिं लेहैं
सदा सुखमूल ॥ १० ॥ कलि प्रपंच दिन बाहि गो
चिन्ता एकनिशि कीन ॥ कृपासिंधु रघुवंशमणि

स्वपनसीख तवदीन ॥२१॥ वृथाशोच त्यागहुसदा मन निजरूप विचार ॥ सुजन आदरहिंगे रचहु लीलारस शृंगार ॥२२॥ बूड़त आनंदसिंधु लखि लयणकह्यो निरधारि ॥ जलझूलन रचनारचो लाहुसुखद फलचारि॥ ॥२३॥ रसनसभ्य रसराजप्रिय रसशृंगार विचार ॥ देवराम सिय जासुजिय पूरोनित्य विहार ॥२४॥ सो आयसुलहिकहत कछु रघुपति रीतमति धारि ॥ संत रसिकजन करिकृपा लेहैंसकल सुधारि ॥२५॥ अथ प्रारम्भ ॥ श्रीमन्नित्य राघवायनमः ॥ दोहा ॥ भादोंसित एकादशी समय सुहावनजानि ॥ रामसिया गुनमनिसजे सरस अनूपम बानि ॥२६॥ जलज नयन उरबाहुवर रतन अनूपमभाल दिव्यवसन भूषणअशन लसन मनोहरचाल ॥२७॥ कहा कहौं छवि आजकी रतिपति कोटिनवारि ॥ रमतनित्य साकेतमें छविअनन्त सिंगारि ॥२८॥ जनकलली रघुनाथ छवि शोभाराज समाज ॥ सखीसखा ऋतुमंडली मध्यमनहुं ऋतुराज ॥२९॥ भूषण वसन अनूपछवि परिकर माहविभास ॥ जनुतारा गणमध्यमें पूरणचन्द्र प्रकाश ॥३०॥ हरिगीतछन्द ॥ सजिसाज ताजसमाज सखिरघुराज सिय अनुपमलसे ॥ जनुतड़ित घनमें श्यामघन छहरैं छटा धनुशरकसे ॥ अतिमधुर कलरव करत भूषणगानपट झलकानकी ॥ झण्यान झिलमिल झालरैं झलमलैंशोभा भानकी ॥१॥ चरछत्र चामर दरतगण कविको कहे उपमानको ॥ रन्दि चोवदार नकीबबोलत बंदिविरुद विधान को ॥ झुखलसत श्रमसीकर सलोने कहिन सुखमा जातिहै ॥ जनुभये मालिक रसविवस असकहत

हम सकुचाति हैं ॥२॥ रुचिरुचि सुगंधन देतवीरी क-
हत शीरीं बात हैं ॥ सुनि विविधि मुनि परिहास बा-
नी मन्दमन्द सुमुकात हैं ॥ गावत परस्पर सखि सखा
सुख देत आनंद कंद को ॥ बसि होत कोन विलोकि
छवि सिय सहित दशरथ नन्द को ॥३॥ दोहा ॥
विविध बधूटी सखीगान नाचत विविधि विधान ॥
गुनमनि छपित न होत हिय पुनि पुनि करत बखान
॥४॥ एगकाफी ॥ दशरथ राजलाला श्री जनक
किशोरी हो ॥ जल झूलन हित लाल लियो चित
चोरी हो ॥ सखा सखिन की भीर वीर छवि को कहे ॥
उमड़ि चलो सुखसिंधु धन्य मुद जो लहे ॥१॥ सर-
सराग अनुराग बाजने बाजहीं ॥ अलिगण मंगल
साज सकल विधि साजहीं ॥ गज सुकतन सो थार
मणिनमय सोहहीं ॥ लसत अमोलिक हार लाल
मन मोहहीं ॥२॥ पटभूषण सजिसीय छटासी रा-
चहीं ॥ लखि हरि बर घनश्याम मोरगण नाचहीं ॥
बन प्रमोद इत्यादिक द्वादश चार हैं ॥ कोटिन ब्र-
ह्मानन्द अनन्द विहार हैं ॥३॥ सुखद सोज मणि
जड़े सुबंगले साजही ॥ सबथल करि विश्राम राम
सिय राजही ॥ लाल लली सुसकानि बसीकर मंत्र
हैं ॥ भूषण वसन विचित्र मनोहर यंत्र हैं ॥४॥५॥
॥ हरगीत छन्द ॥ अलिगण अनूपम संग नर्म स-
खान की छवि को लहैं ॥ लखि काम कल कमनीय
कोटिन रति रती सम किमि कहैं ॥ तन श्याम मर-
कत मृदुल सियवर सखीगण लहि दुति रली ॥ मान

हुं अलौकिक कसौटी पर कनक श्री कसिबेचली ॥४॥ पुनि निरखि पुनि सियवर सुघर छवि छाकि इमि प्रमुदित भली ॥ अवलोकि दिनकर निकर जनु विकसित भई पंकज कली ॥ पुनि राग सहनाई परस्पर सबै हिलमिलि गावहीं ॥ श्री राम सीता सहित आनंद कंद अति सुख पावहीं ॥ ५॥ रघुबीर सरयू तीर जात अली भली लीला करैं ॥ सिय सहित दिनकर वंश भूषण निरखि हिय आनंदभरैं ॥ सुखपाल सुन्दर शुक्र कोटिन चन्द रवि छवि भाजहीं ॥ श्री राम सीता लसत तापर कोटि रति पति लाजहीं ॥ ६॥ जलकण सोहावन बरषिघन बहुरूप रंग लखावहीं ॥ हरि देखि छबि घन घटन की परिकर सहित मनभावहीं ॥ बोलहिं विविध विधि मोर मदन मरोर अति सुख सो सने ॥ नाचहिं सुगति पर खोलि जिय रव कोकिला चातक घने ॥७॥ दोहा ॥ रतन भूमि सुन्दर सुखद विविध भांति जहँघाट ॥ लाललली परिकर सहित शोभित भे सबठाट ॥ २२॥ मनि मनि ते प्रतिबिम्ब करि द्विगुणित मिलैन अंत ॥ जनु सरयू तटमोदलहि धारे रूप अनन्त ॥२३॥ ॥ इति श्री राम रसिक गुणमणि विरचिते जलझूलने कनक भवनतः सरयू पुलिन गमनम नाम प्रथम स्तरंगः ॥१॥ ॥ अथसरयू शोभा ॥ रागकाफी॥ रतना करकर सौज सुपरिकर सोहहीं ॥ कोटिन रविशशि मनहुं मुदित छवि मोहहीं ॥ दम्पतिमृदु

मुसुक्याय सकल तन देखेऊ ॥ छैल छबीली ध-
न्य भाग्य निज लेखेऊ ॥ ५ ॥ सोहत तान तरंग
सुन्दरी गावनी ॥ उठीं घटा चहुँवोर मोर मनभा-
वनी ॥ खग अनूप बहुरूप विविधि विधि बोल-
हीं ॥ लहि सुख ब्रह्मानन्द मुदित मुनि डोलहीं ॥
॥६॥ लाललली छवि देखत हिये हुलास सों ॥
विहंग रूपकरि देवलसे जनु आस सों ॥ दिव्य
रतन मय फरश घाटसीढ़ी बनी ॥ मनि पुतली-
सी भली लली डोलें घनी ॥ ७ ॥ ललित लता तरु
सुमन सुअलि रव भावहीं ॥ मानहुँ सीता राम च-
न्द्र गुण गावहीं ॥ सुवरण मणि मय सेतु चारु
विधि कर बनो ॥ सरयू बीच अनूप कंज फूलो
मनो ॥ ८ ॥ छविगण चारु पराग परम उप-
मा लहै ॥ हाटबाट बर विरचित शोभादल अहै
॥ सरयूबीच सुपांति सुन महलावली ॥ वारपार
सुन्दि धाम दाम शोभा भली ॥ ९ ॥ चारिघाट
युगधार चारु कमलावली ॥ रसबस परम अनंद
वृन्द मोही अली ॥ पुरुष सदन कहुँ कहुँ युवतिन
के धाम हैं ॥ इन्द्रपुरी सुखधाम तदपि छवि छा-
म हैं ॥ १० ॥ शुकपिक सारसमोर आदि चातक
घने ॥ सुघर कंगूरन बोलत सुधा सोहावने ॥ भु-
वन पुंज अभिराम धाम पर वारिये ॥ काह इंद्र
ब्रह्मादि महल सम धारिये ॥ ११ ॥ कबहूँ अवध
भुआल सभासद राजहीं ॥ राजसिरी सहभूप वृंद
छवि भाजहीं ॥ कबहूँ कुँवरि युतमात सकल

सुख लेखहीं ॥ परमानन्द अनन्द सुकौतुक देख
हीं ॥ १२ ॥ दोहा ॥ श्रीसरयू छबि को कहै महिमा
अगम अपार ॥ मज्जत बिनुश्रम लहत जिय रघु
बर सिय दरबार ॥ २४ ॥ ॥ इति श्रीरा
म रसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने श्री
सरयूशोभा परिकर समाज भूषणालंकार सहित
पुलिनमण्डली वर्णनो नाम द्वितीय स्तरंगः ॥
॥ २ ॥ ॥ अथजलयान वर्णन ॥ राग काफी ॥
घने बाजने जड़े दिव्य मणि सोहहीं ॥ जगा मगा
जगा मगा मोरपंख मन मोहहीं ॥ पिनिस सिंह घो
ड़ हौर अमित रवि चन्द से ॥ देखत मन फसिजात
परम सुख फन्द से ॥ १३ ॥ अमित एकते एक स्वेत
मणि साज हैं ॥ लालपीत सब रंगरंग शिरताज हैं
॥ कोउ मोतिन मे कंचन मणिमय जानहैं ॥ रज
त सीप गजदंत मयंक समान हैं ॥ १४ ॥ मीनन
की बहुबोहित सर्वविधि साजहीं ॥ हरित अबीरी
धनी श्यामघनि भ्राजहीं ॥ कतहुँ रतनमय पलं
ग देखि मन मोहहीं ॥ तोशेखाने आदि खज़ाने सो
हहीं ॥ १५ ॥ कहुँ संध्यादिक साज सजे जलयान
हैं ॥ पक्षीगण तहंकरत रामगुण गानहैं ॥ कहूँ
भावरस भरी अली मतिमान हैं ॥ व्यंजन रचे
विचित्र दिव्य पकवान हैं ॥ १६ ॥ ताशादिक छत
झालर मणिमय साजहीं ॥ मनहु चक्र शिशुमार
चन्द रवि राजहीं ॥ सिंहासन मसनन्द फरश छवि
खान के ॥ रतन अमोलिक लाल जड़े दुतिभानके

॥१७॥ झाड़ फनूस विचित्र आदरश दुति लसी मानहुँ त्रिभुवन जीति परम सुखमा बसी ॥ कहुँ परदे जरतार लसत मणिकार के ॥ हिमगिरि धार कि छविरस सार बहार के ॥१८॥ सुन्दर डोरि सुकेश वेस दुति दामिनी ॥ जड़ित पूतली खम्भ मनहुं सुर कामिनी ॥ तिनकर कंज देवालगीर बहुजाति की ॥ दिपति पद्मिनी लियो जीति बहुभांति की ॥१९॥ रबिशशि प्रभावितान पिंजरन में टँगे ॥ पक्षीकल रव करत सुधारस सों पगे ॥ पानदान अतराहिक मणि मीने करे ॥ फूल चँगेर गुलाबपाश आदिक धरे ॥२०॥ भयो कामछवि दामदेखि शोभा घनी को बरणै सुखधाम जहाँ त्रिभुवनधनी ॥ कंचन कल शे लसे लालमणि ख्यात हैं ॥ जनु रबिछवि को जीति निकर दरशात हैं ॥२१॥ ठौर ठौर ध्वज लसे पताके जालहैं ॥ जरीताल में बसन लसेमणि लाल हैं ॥ दिव्य अनूपम रूपजीति रवि छवि घनी ॥ पूरण ब्रह्मप्रकाश सु अद्भुत गति बनी ॥२२॥ लखि विशाल जलयान सदाशिव भावनी ॥ सुर पति सदन सिहात निरखि छवि पावनी ॥ काम सरिस सजि केवट छवि कवि को कहै ॥ रविशशि सरिस प्रकाश परम सुखमा लहै ॥२३॥ तिय निषाद रति सरिस कहूँ दुति दामिनी ॥ मणि पुतलीसी लसति महागुण भामिनी ॥ बांकी भौं खंजन दृग अंजन गोरी हो ॥ कसे सुघर सुठि फेंट लिये मन चोरी हो ॥२४॥ आयुध निज अनुरूप सजे सति मान हैं ॥

बनि निषाद जनु छैल लसत जलयान हैं ॥ शोभासो किमि गाइये छवि जलयान की ॥ कोटिन ब्रह्म प्रकाश राम जहँ जानकी ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ नौका नाम अनन्तगुण छवि अनन्त धनसाज ॥ सुन मनिसो केहि विधि कहै लीला नित्य समाज ॥ २६ ॥ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूषने नौकोपकरण वर्णनो नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥ ॥ अथ जलयान विहार ॥ राग काफी ॥ सो निषाद लैधाये हरिरुख पायके ॥ छकत महा छवि मनहुं रंकनिधि धायके ॥ लखिसो सरयू तीर दियो हरि सानहै ॥ जनक लली मिलिचली अली करि मान है ॥ २६ ॥ सखासखी सब चढ़े रामसिय सुखमई ॥ सुमन वरषि चहुँवोर मुदित जै जय भई ॥ शंख पखाउज झांझ मलंख मुनि सोपकी ॥ भुवन विदित असवारी रघुमणि बोपकी ॥ ॥ २७ ॥ हरि हर विधि बहुसुमन व्योम झरिलावहीं ॥ चोबदार बरविरद नकीब सुनावहीं ॥ मढ़ित चँदोवा जड़ित डोरि सुख केशकी ॥ सिंहासन छवि छत्र कोटि रविवेसकी ॥ २८ ॥ तकिया गादी सजी सरस ससनन्द है ॥ तापर दंपति लसत सु दशरथ नन्द है ॥ दक्षिण प्यारेसखा लषण छविसोहहीं ॥ वामभाग सियसाथ अली मन मोहहीं ॥ २९ ॥ हावभाव सबकरैं बसीकर मंत्रसी ॥ निरखि लड़ैती लालभई मति यंत्रसी ॥ रागरागिनी मधुर तान परि पूरिहैं ॥ नरनारिन के होत कोलाहल भूरिहैं ॥ ३० ॥

॥ हरिगीत छन्द ॥ मनमोहहीं छवि जानकी वर निरखि सब तृण तोरहीं ॥ निजभाग्य बारम्बार कहि कहि कमल पद कर जोरहीं ॥ खरभर पर्यो सब कोउ चढ्यो अभिलाष जो जेहि विधि चहे ॥ तब जानिरुख जल यान लै सु निषाद झांकी लै रहे ॥ ८ ॥ कौतुकी नाचहिं गावहीं कहुं अप्सरा गति भावहीं ॥ मनहरषि चारों भाय बहुबकसीस परम पढावहीं ॥ सो लेंहि अंचल बांढ़ि आशिष दै मुदित गुण गावहीं ॥ जोड़ी रहै चिरजीव नितनव सुख निरखि हम पावहीं ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ प्रभु आसन आसीन महामगन शोभा निरखि ॥ नाचत कला प्रवीन हाव भाव मृदुगान करि ॥ १ ॥ सोहत परिकर हाथ छत्र चमर अनुपम ढरत ॥ सो छवि किमि कहिजात दंपति रतिमति जे छके ॥ २ ॥ ॥ इतिश्री राम रसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने सह समाज नौकोपरि आरूढ वर्णनोनाम चतुर्थ स्तरंगः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ अथ आलीगाणं नखसिख ॥ दोहा ॥ कोउ तन सरस गुलाब मृदु चंपक तन कोउ सोह ॥ कोऊ कंज तन नयन वर कोन देखि जो मोह ॥ १ ॥ ॥ रागकाफी ॥ सुन्दर वदन मनोहर छवि की धाम हैं ॥ चन्द बदनि कोउ कंचन अंग अभिराम हैं ॥ वन्दन भाल रसाल राग छवि लसिरही ॥ कनक कदलि दल मध्य श्याम बेनी अही ॥ २ ॥ चाप भौंह शरनैन कुन्द दुति दांत हैं ॥ सखी सलोनी चन्द बदनि दरशात हैं ॥ अरुण अधरनप लटकन

मुख मुसक्यात हैं ॥ लजत लाल सुर चाप सुक्र ज-
लजात हैं ॥ ३२॥ बन्दी बेना तिलक विविधि भूषण
सजीं ॥ रतिरंभादिक ताहि देखि अतिशय लजीं ॥
श्रुति भूषण अनमोल कपोल विभात हैं ॥ सरसपर
स युग रविकर जनु जलजात हैं ॥ ३३॥ चिबुकमध्य
सुचि नील विन्दु रमि साजहीं ॥ कनक सिंहासन मा-
नहुं रघुबर राजहीं ॥ कंबुकण्ठ सुक चंचु नासिका
चारुहैं ॥ तामे जलज उदार हार सिंगारुहैं ॥ ३४॥
ललित भृंदरी रतन किनारी साजिरहीं ॥ दामिनि मा
नहुंघेरि नखतगण छविगाहीं ॥ कर सनाल अर विं
द विविधि भूषण सजीं ॥ कोटि कामिनी दाम दा-
मिनी द्युतिलजीं ॥ ३५॥ चुरियों पहुंची आदि हेम
गण सों जड़ी ॥ रविमण्डल जगमगित जोति जनु
चितगड़ी ॥ हरित कंचुकी कुचन लसत जलजात सो
॥ बेलपत्र शिर शंभु गंगजल पीतसो ॥ ३६॥ सुंदर
नाभि गंभीर अमीरस सो भरी ॥ राम सलोने लषण
सखन को बसिकरी ॥ त्रवली तरुणि तरंग देखि मन
रचिरहा ॥ कटि विलोकि मृगराज हार बन सचिरहा
॥ ३७॥ लहंगा सुचि जरतार रतन शोभा महा ॥ म-
नहु सहित परि वेष सुदिनमणि छविगहा ॥ रोमवली
उदोत यमुन छवि जाल की ॥ जानुरंभ विपरीति म-
नोहर लालकी ॥ ३८॥ नूपुर धुनि झनकार कोला-
हल मोहहीं ॥ मनहुं हंसगति जीति सुअलि र व
मोहहीं ॥ भूषण अंगुरिन पीठ लालतल भावने
॥ जनु अर विंद लोभाय लगयो अलि पावने ॥ ३९॥

छैल छबीली बांकी चितवन देखहीं ॥ सकल सुमन शर वेधि स्ववस सब लेखहीं ॥ योवन माती लसी लाल के मन बसी ॥ ताकि तिरीछे नैन मधुर करती हँसी ॥ ४० ॥ महाराज शिरताज सुअन रुख पावहीं ॥ तिमि अंग रूप अनूप रूप दरशावहीं ॥ सजि अवतंस प्रशंस हंसगति राजहीं ॥ उपमा देत सकल भारती लाजहीं ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ अलिगण छवि कवि की कहै जेहि वस युगुल किशोर ॥ दम्पति लीला रसरस नितपीवत चितचोर ॥ ३७ ॥ ॥७॥ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक सुखमणि विरचितं जलझूलने आलीगण नखशिख वर्णनोनाम पंचम सर्गः ॥ ५ ॥ ॥ अथ सख्यगण छवि ॥ राग काफी ॥ अति प्रवीण रसलीन सखा सुख भावहीं ॥ हास विलास नवीन रामरुख राखहीं ॥ सजे सुकलँगी पेंच पाग अनमोलहैं ॥ दिये तिरीछे ताज अनूपम तोलहैं ॥ ४२ ॥ मुकट रतन मय सजत लजत लखि काम हैं ॥ कोऊ सजे शिर मौर सुमन अभिराम हैं ॥ चित्रविचित्र बसन पटु के जरकसी ॥ सजे पंचशर कमर मनोहर तरकसी ॥ ४३ ॥ बीरन सो मुख लाल संत छवि मोलसे ॥ मानहु प्रात विभात सूर कर को हँसे ॥ पूरण तानतरंग प्रेम रस रस में ॥ प्यारे रूप अनूप सजे हरिपासमें ॥ ४४ ॥ हँसनि मधुर मुसक्यान कामिनी मति हरैं ॥ छैल छबीले नैन सुधा बानी दरैं ॥ भूषण तन अनरूप अनूपम राजहीं ॥ कोटि कोटि रवि चंद मदन छवि लाजहीं

॥४५॥ हरिगीत छन्द ॥ पूरण अलखरुचि रूपधारी सखिसखा रघुनाथ के ॥ नित रहत हरि के पास निशिदिन वनि अनूपम गाथ के ॥ जहँ चहत जैसी जानकी वर बनत तैसे रूप हैं ॥ कहुँ सखा सखि बनि लसत सखि कहुँ सखा वेष अनूप हैं ॥ १० ॥ वरक कहुँ जानविधान नानाभांति के भूषण लसैं ॥ कहुँ ऋतु वसन्त अनन्त सुखमा पायमुद सियवर हँसैं ॥ कहुँ बाग बन चातक मयूरन सरसरस उपजावहीं ॥ कहुँ चारुशीला शशिकलादिक सहज सुभगा भावहीं ॥ ११ ॥ कहुँ देवगण होय यानचढ़ि कर वर सुमन वरषावहीं ॥ कहुँ रासमें पूरण मनोहर चंदछवि दरशावहीं ॥ भूषण वसन मनहरण तन घन श्याम बनि मन भावहीं ॥ हरिसंग विहार अपार सुखमन बुद्धिपार न पावहीं ॥ १२ ॥ कहुँ रामसिय संग विविधि व्यंजन रुचिरभोग लगावहीं ॥ यह परमस्वाद अनादिसुख ब्रह्मादि दुर्लभ गावहीं ॥ नहि पलक न्यारे होतप्यारे ये युगल सरकार के ॥ इमि नर्म जानत मर्म सब हैं रूपराम विहार के ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ नर्म सखन की छवि अगम भोग विलास अपार ॥ वेदन महिमा कहिसकत कविकिमि पावै पार ॥ २८ ॥ कोटिन मनसिज मनहरैं सखा नर्म रघुनाथ ॥ जिनके दरशन को खड़े सुर गण शक्तिन साथ ॥ २९ ॥ कुन्दइंदु वरदेह कोउ चंपक तन छवि गेह ॥ विपुल रामतन श्याम छवि गुणि गणि सने सनेह ॥ ३० ॥ ॥ इति श्री राम

रसिक गुणामणि विरचितं जलभूलने सखागाण सु-
विगुण वर्णनोनाम षष्टमस्तरंगः ॥ ६ ॥ ॥ अथ
विविधि विहार ॥ रागकाफी ॥ मंगल मय जलयान
चहूँ दिशि सोहई ॥ जिनमें नाच तरंग रागधुनि
मोहई ॥ सीयराम भरतादिक मोद निधान की ॥
होत आरती चहुँदिशि मंगल खानकी ॥ ४६ ॥ चि-
त्रलिखे सो लोग दरशि मग मोहहीं ॥ हरि हैं रूप
अनूप सकल थल सोहहीं ॥ जसजाको अभिलाष
मनोरथ भावहीं ॥ ब्रह्मानन्द अनन्द अवध सुख
पावहीं ॥ ४७ ॥ अवध चहूँदिशि बसत परम अव-
तार हैं ॥ मंगल धाम विराजत राम अधार हैं ॥
निजनिज धामविलास हासमुख छावहीं ॥ दम्पति
लीला उदित मुदित गुण गावहीं ॥ ४८ ॥ भूले नि-
जनिज गेह देहसुधि कोकरैं ॥ मोहन मूरति चुभी
निमिष पलनहिं परैं ॥ सुमन सुगंधित अतर पान
सिरनेत हैं ॥ लालन के अनुकूल सखासखि देतहैं ॥
॥ ४९ ॥ महिमा अपरम्पार सखासखि की कहैं ॥
प्रभुसम विभव विलास अंतश्रुति किमिलहैं ॥ निसि
दिन विविधि सिंगार युगल सरकार के ॥ तिमि परि-
कर सब सजत साज एक तारके ॥ ५० ॥ हरित श्याम
कहुँ पीतलाल सिंगारहीं ॥ रंग गुलाब अबीर बसन
मणिधारहीं ॥ फूलन के सब भूषण बसन बनावहीं
॥ विविधिरंग इकरंग छटाछवि पावहीं ॥ ५१ ॥
कबहुँ गुलाबी फूल सुनख सिख साजहीं ॥ पीतच-
मेली कुन्द कुसुम रंग राजहीं ॥ लोने लोने छैलगोल

कहुँ टोकहीं ॥ लेकर दानमहान अलिन को रोकहीं ॥ ५२ ॥ मान चरित मेंदोउ दिशिनर्म मनावहीं ॥ कहिमृदु बैन रिझाय युगल सुखपावहीं ॥ कहूं नर्मके लाल मान मन भावहीं ॥ परिकर करिकर हिये लगाय मनावहीं ॥ ५३ ॥ सामराज शिर मौर सियाछवि मन बसी ॥ मुख्य चारु शीलादि अनीपति कहुँजसी ॥ चन्द्रकलादिक सखीघनी सुखमा सनी ॥ जनु मनोज की फौज वोजसो अनिठनी ॥ ५४ ॥ रामसीय होय तिमिहि सखनदल तियलसे ॥ कोटिन रति छविधाम परस्पर मनफँसे ॥ महरानी महराज सिंहासन सोहहीं ॥ परिकर करवर छत्र चमर धर मोहहीं ॥ ५५ ॥ दोउ दिशि छवि सिन्धु सरस सिंगारहैं ॥ कौतुक रचैं विहार अनेक प्रकारहैं ॥ एक एक कर नैनसैन करमेलहीं ॥ चोरमि हीचन आदि खेल कहुं खेलहीं ॥ ५६ ॥ व्याहसाज कहुंसाजि सुमंगल गावहीं ॥ दम्पति भाँवरिभरैं सबैसुख पावहीं ॥ सकल सुअौसर जानि सुमन वरषाकरैं ॥ जयजय जय धुनिसाधि परम सुख उरधरैं ॥ ५७ ॥ लगे पिनिमि अनमोल निशा सुख पायके ॥ नृपसुत संध्याकरैं सबै हरषायके ॥ तन अपार दुतिताहि चाहिसब धावहीं ॥ देखि अनूपम रूप सबैं सुख पावहीं ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ लीला श्री रघुनाथ की विमल विचित्र अपार ॥ नित नवमंगल मूलवर सुनमनि छवि आगार ॥ ३२ ॥ ७ ॥

॥ ७ इति श्री रामरसिक गुणमिण विरचितं जलभूलने सखी संयुक्त प्यारेप्यारी विवि

धविहार लीला वर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥
॥ अथ शिशिर ॥ दोहा ॥ कछु विहार षट
ऋतु कहत लीला ललित अपार ॥ करत जनकजा
सखिसखा सुन्दर राज कुमार ॥ ३२ ॥ प्रति ऋतुकी
जलयान लखि लाजत सुरपति भौन ॥ जहां जात द
रशनतहँ सजेसाज ऋतु तौन ॥ ३३ ॥ प्रथम शिशिर
वर्णनकरत तेहि अन्तर ऋतुराज ॥ यह सम्मत मत
काव्यको देखि लिख्यो शिरताज ॥ ३४ ॥ सुन्दरछन्द
॥ छवि जगमगात मणिदीप जाल ॥ नवरतन
सजे परदे विशाल ॥ दुतिझाड़ फनूसन की अनन्त
॥ उमगति जोति बहुविधि लसन्त ॥ १ ॥ तहँ दि
व्य सिंहासन जोतिजाल ॥ आसीन सियावर रसिक
लाल ॥ ललना गणालिये सबनमें संग ॥ बहु शिशि
र चरित रचिरहे रंग ॥ २ ॥ अस कहत मदन तहँ
जोरिहाथ ॥ होरी बहार यह लखिय नाथ ॥ सुहृसखी
सखा सियपिय अनन्त ॥ उठि सकल हर्षि खेलत
वसन्त ॥ ३ ॥ वरषीत सुमन झरि होत चार ॥ सब
सजे पीत भूषण सिंगार ॥ डफ ढोल आदि बाजत
मृदंग ॥ मचि अति धमार गारी तरंग ॥ ४ ॥ अबला
चपलासी धरहिं धाय ॥ हाहा कराय छांड़हि बनाय
मचिरही तहां होहो सुफाग ॥ मरबोर भयेसब रंग
राग ॥ ५ ॥ तोमरछन्द ॥ कहुँभागि सखिगण जाहिं
॥ कहुँनर्मदल विचलाहिं ॥ करसेत लालगुलाल
सखि कुचन मर्दत गाल ॥ २ ॥ पिचकान केसर रंग ॥
तर बन्द कीन्हो अंग ॥ दियो सैन लक्षण भाय ॥ को

उ भजि न बाहर जाय ॥ २॥ मुनिउठे लषण समेत ॥
लियोघेरि दिशिशिरनेत ॥ कोउगेंद फूलचलाय ॥
दैताल गारीगाय ॥ ३॥ चलैं हमकले भरिरंग ॥ घ-
हरात डफ मिरदंग ॥ झोरी अबीर अतोल ॥ कुम
कुमें चलत अमोल ॥ ४॥ लखिसिया चहुँदिशि
रोन ॥ निज सखिन दीनोंसैन ॥ कोउजानि अधीरज
होह ॥ तुमको हमारी सोह ॥ ५॥ सबभरहु अंग
आनन्द ॥ धरिलेहु आनन्दकन्द ॥ लैधसी रंगगुला-
ल ॥ सबरंगो लाल रसाल ॥ ६॥ सखिघेरि श्रीरघु-
नाथ ॥ सबबंधु के गहिहाथ ॥ रामरोर नयनन ऊ-
टि ॥ लियो ललन के मन लूटि ॥ ७॥ लाईं पकरि
निज गोल ॥ बोलैं विचित्रित बोल ॥ कहैं वीरता
काकीन ॥ कहैंगये सखाप्रवीन ॥ ८॥ कह लषण
पायप्रसंग ॥ दोकहु सुअंचल अंग ॥ किये भरत
रिपुहन सान ॥ हैंभेटये सुखदान ॥ ९॥ इमिवचन
सुनत रसाल ॥ सब मुदित भे दैताल ॥ अलिगण
सबै मनभाय ॥ भूषण बसन पहिराय ॥ १०॥ कटि
तें पिताम्बर छीन ॥ रचिनवल नारि नवीन ॥ सब
भाय नाच नचाय ॥ सिय सखी मन हरषाय ॥ ११॥
अलि कहैं फगुवा देहु ॥ नहिंजान पैहौ गेहु ॥ हरि
लीन दानद राज ॥ भरि लेहिगी सबकाज ॥ १२॥
॥ दोहा ॥ यहिविधि नवल किशोरसो सियसखि
होरी खेलि ॥ लालललो नूतन सजे छविरति मदन
सकेलि ॥ ३५॥ ॥ इतिश्री रामरसिक
गुणमणि विरचितं जलझूलने शिशिर ऋतु अंतर

गत होरी वसन्त वर्णनं नाम अष्टम स्तरंगः ॥ ८ ॥
॥ ७ ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान पीत हिंडोल
फूल लतान करि वर सोहहीं ॥ तहँलाल लली रसा-
ल अलिगण सखासाज विमोहहीं ॥ कहुंकहुं क-
मलकलि कलितकहुं मणिकरिन कर बर खंभहैं॥
कहुँकीर कोकिल चारुचित्रित रतन के अस्तंभहैं॥
॥ १४॥ अतिपीत मणिगण डोरि ग्रंथित दामिनी
छवि कवि रही ॥ अद्भुत रतन घन सजत पहली
सूरशशि दुति दाबिरही॥ तापर सुमन सिंगारसजि ऋतु
राजसे सियपिय लसैं ॥ करसुमन धनुशर मधुर मू-
रति छविमनोभव कोहसैं ॥ १५॥ भूषण वसन मणि
लसनि तनधन कसनि हँसनि छटायनी ॥ भूलत
झुलाय वसंत गावहिं सखिसखा शोभा बनी ॥ बाजे
सोहावन मधुरबाजैं पीतमणि छविजनु छनी ॥ अ-
लिगण सुमन सर वाटिका तहँ त्रिविधि मारुत गति
सनी ॥ १६॥ दोहा ॥ पीतसुमन भूषण वसन सिय
दुतिपीत लसंत ॥ सखासखी रंगपीतमें सियवर
वनेवसन्त ॥ ३६॥ भूलत लालललली ललित सु-
खमा सहित अनन्त ॥ भावत चन्द्रकलादि गति
गावत मधुर वसन्त ॥ ३७॥ ॥ इति श्री
रामरसिक गुणमणि विरचितं जलझूलने ऋतु
वसन्त हिंडोल वर्णनंनाम नवमस्तरंगः ॥९॥ ॥
॥ ७ ॥ अथग्रीष्म ॥ तोमरछन्द ॥ कहुंरामछवि
घनश्याम ॥ लियेसखा सकललाम ॥ पैरैं सरस
सहभाय ॥ सरयू पुलिन हरयाय ॥ १३॥ करतारहै

पिचकार ॥ जलउड़हि मनहुँ फुहार ॥ जनु मदन रसबस हेत ॥ करसुमन झर शिरनेत ॥ १४ ॥ सखि सखा रसिक सुजान ॥ बनिजात कहुँ जलयान ॥ कीउ बनि सिंहासन जात ॥ तेहिबैठि हरि हरषात ॥ ॥१५॥ जबहोत अन्तरध्यान ॥ ढूँढ़तसकल जलयान ॥ होयजाय विरहविहाल ॥ पूछहिं लतनगहि व्याल ॥ १६ ॥ ढूढ़हिं कमलबन कुंज ॥ सरयूपुलिन खगपुंज ॥ हेपवन प्रिय सुखदैन ॥ कहुँलखे राजिव नैन ॥ १७ ॥ करुप्राणनाथ मिलाय ॥ हरुशोक पुंज विलाप ॥ खोजत सखीगण लाल ॥ ह्वै विरह विकल विहाल ॥ १८ ॥ जनुपरे वारिधि भौर ॥ चिंता मगन सबतौर ॥ भेप्रगट सहित सिंगार ॥ हरिकरत सखन पुकार ॥ १९ ॥ को सुनेसुधि तन नाहिं ॥ तबपास हरिचलि जाहिं ॥ लखि स्ववस विरह अधीन ॥ जनु तपत जलसोंमीन ॥ २० ॥ मुखचूमि करगहि लीन ॥ जिमि चित्रकोउ लिखिदीन ॥ खोले कमलदृग नर्म ॥ लखि ललन आनंद पर्म ॥ २१ ॥ सब पकरि हरिकर लीन ॥ कह प्राणप्रिय छलकीन ॥ करिविरह विकल निदान ॥ भेआपु अंतर्ध्यान ॥ २२ ॥ दोहा ॥ कस अन्तर पट होतही अन्तर पट करिलीन ॥ अब निकसन की बोलनहिं छैल कियो आसीन ॥ २३ ॥ कहाँगये घनश्यामहो लागी विरहदवान ॥ वचनसजीवन वरषिके राखि लीजिये प्रान ॥ २४ ॥ कहामीत नौनीतहै अचरज सुहृद यषान ॥ मोहनप्रीत लगायके घायल करत

निदान ॥ ४०॥ लहर जुलुफ कारीकहर लहरन देत निशंक ॥ सुधामंत्र कहिज्याइये नातरु लगत कलंक ॥४१॥ श्याम सलोने कतकियो टोनेडीठ लगाय ॥ बिनदेखे तरसत नयन चैनगह्यो नहिंजाय ॥ ४२॥ प्रेम कटारी मारिकै नैनसैन तरवार॥ घायलकरि मायल कियो आसन चाहिये यार ॥ ४३॥ अशन वसन भूषण सकल तबहित सज्यो रसाल ॥ चहीन अन्तर पट कपटमोहन दशरथलाल ॥ ४४ ॥ मैं बलिहारी नज़रकी परछाहीं परिजात ॥ विरह कटारीते सरस बिना दरश अकुलात॥४५ अहो छबीले छैलवर श्याम सलोने गात ॥ क्यों तरसायो दरशबिन मतिगति हरि हरि ख्यात ॥ ४६॥ ललन सलोने लाड़िली असह विरह संयोग ॥ तरफरात चषदरश बिन जिमिजल मीन वियोग ॥ ४७॥ गुणमणि धनिजन जानकी राम लषण जेहिवोर ॥ इन्द्रमुदित तेहिदिशि लखत जिमिनिशि चन्द्रचकोर ॥ ४८॥ गुलाल कमल पद अमलदल छके सरस रसनैन ॥ गुणमणि के श्रुति सीचिये सुधामधुर वर वैन ॥ ४९॥ सिया सहित सखिसखन के मुनिरघुनन्दन वैन ॥ सुधावचनकहि तृप्तकिय सबको राजिवनैन ॥ ५०॥ हरिगीतछन्द ॥ जलयान मणिमै खम्भ फूल लतान करि मन मोहहीं ॥ खसखसादि परदे रचितमणि मुकतान करि मन मोहहीं ॥ बहुझाड़ सुमन अनूपकी झालरि सुशोभा पावहीं ॥ तेहिमध्य कंज विचित्र मणि दीपक

गिलास सोहावहीं ॥ १७॥ दीवारगीर विचित्र फूल-
न मणिन खंभन सोहहीं ॥ वरकमल अमल अनूप
की शशिते प्रभामन मोहहीं ॥ वरफरस सरस गुला-
ब फूलन रचित रचना को कहैं ॥ तहँफूल डोल वि-
शाल परम रसाल सबविधि छविलहैं ॥ १८॥ अ-
स्तम्भ चित्रित पुष्पमें जो मणिसरिस सोभावहीं ॥
कवि किमिकहै शोभा प्रसून जो मणिन मुकल-
जावहीं ॥ छूटहिं फुहारे जनुसितारे जानमें छवि
लखिपरैं ॥ सुन्दर सुगन्धन व्यजन चहुंदिशि विवि
धिविधि चामर ढरैं ॥ १९॥ श्री जनकजा रघुनाथ तहँ
सिंगार फूल सोहावहीं ॥ छविकौन दम्पति की कहै
रतिकाम कोटि लजावहीं ॥ सोइसाज साजे सखिस-
खा सियराम हिलिमिलि गावहीं ॥ गुणमणि सखे
लखि युगल शोभा परम आनंद पावहीं ॥ २०॥ ॥
॥ दोहा ॥ नितनव मंगल मूलवर लीलाललित वि-
हार ॥ जो समुझैं सज्जन सुमति लहैं अनन्द अपार
॥ ५१॥ वंगले सुमन सुरंगावर विमल चहूंदिशि चार
॥ जलविहार ग्रीषम सुखद ॥ सजिसिय वर सिंगार
॥ ५२॥ चलत फुहारे झपिरहे खसखाने जलयान
॥ ग्रीषम में सियवर रचत सुमन अभूषण खान॥
॥ ५३॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि
विरचितं जलझूलने ग्रीषमऋतु विहार वर्णनंनाम
दशमस्तरंग ॥ १०॥ ॥ अथ पावस ॥ दोहा ॥
कहिआये पावसप्रथम पुनि ऋतु को क्रमजानि ॥
कहतकछू संक्षेपसों सुनहु मुदित रस खानि ॥ ५४॥

विविध साज जलयान को रचनारच्यो नवीन ॥ कं-
जसिंहासन मध्यहरि दल गण नर्म प्रवीण ॥ ५५ ॥
॥ हरिगीत छन्द ॥ वरषत सुधाबानी मनोहर राम
सिय घन दामिनी ॥ सखि सखा अनुपम मोरगण
अतिमुदित मनलहि छविघनी ॥ नृत्यत मनोहर
सुन्दरी लखि शशिवधू छविलाजहीं ॥ वहु हाव
भाव कटाक्ष भूषण वसन मणिगण राजहीं ॥ २१ ॥
नाचहिं विविधि विधि कौतुकी कौतुक मनोहर
सोकरैं ॥ लखिवन्धु सखन समेत कृपानिकेत
आनंद उरभरैं ॥ लहिप्रात करिकरि क्रिया जुरे स-
माजसाज महानहैं ॥ लागे सोहावन होनगान विधा-
न तान सोहान हैं ॥ २२ ॥ रुखजानि हरिलागे लड़ा-
वन विहँग चित्रविचित्र हैं ॥ कहुँतीत्र तीतिर विपु-
ल बुलबुल लालमाल चरित्रहैं ॥ कहुँ माहिष मेढ़
आदि कहुँ गजराज साज लड़ावहीं ॥ चीते शिकार
उदार कहुँ शूकरन कूकर धावहीं ॥ २३ ॥ कहुँ लड़हिं
सिंहन सिंह कहुँ बरमाल युद्ध सोहावहीं ॥ कहुँ मृगा
आदिक लड़हिं लखि सियराम अतिमन भावहीं ॥
जुरे कुही शाहीन बहरी आदि पक्षिन पै परैं ॥ उड़ि
के गगनगहि लेत पञ्जन आनि हरि सन्मुखकरैं
॥ २४ ॥ निशिजानि नारक होनलागे विविधिविधि
छवि खानकी ॥ सुनिसुनि विदूषक वैन मन सवचैन
रहस निधान के ॥ देखहि मनोहर सीय सखिन समेत
चरित सोहावने ॥ झाकहिं झरोखन यान मो शोभा
सकल मन भावने ॥ २५ ॥ यहि चरित अधिकारीसकल

श्री अवध वासी जानिये ॥ सहलनि कुँअरियुत मातु कहुँ श्रीराज साज वखानिये ॥ यहनित्य रूपअनूप अदभुत परम प्रिय सुखदान हैं ॥ अति सुधा मानीमाधुरी जन छकत रसिक सुजान हैं ॥ २६॥ दोहा ॥ पावस जलझूलन सघन सरस सुमंगल मूल ॥ सीतापति परिकर सहित सोहत सरयू कूल ॥ ५६॥ राजत विविधि हिंडोलने सियवरको सिंगार ॥ सखासखी जलयान में झूलत गाय मल्लार ॥ ५७ ॥ उहीपन सिंगार के बोलत विहंग सन्चैन ॥ सुनि मोहत परिकर सहित सियपिय शोभा ऐन ॥ ५८ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलझूलने वर्षा ऋतु विहार वर्णनंनाम एकादश स्तरंगः ॥ ११॥ ७॥ ॥ ७ ॥ अथ शरद ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान रस विधान रचि निशि शरद गतिनहिं भानकी ॥ मणि दिव्य वटतरु कमल आसन अमित दलदुति छानकी ॥ तेहिमध्य दम्पति अपर दलगण सखि सखा शोभावसी ॥ तहँ रासथल रमणीय चित्रित शशि प्रभा पूरण लसी ॥ २७ ॥ वहुदिव्य बाजे नृत्यसाजे प्रिया प्रीतम गावहीं ॥ करताल चाल मराल थेइथेइ भावबहु उपजावहीं ॥ मुरली मनोहर मधुर धुनिसुनि सकल विधिकी सुधिहरी ॥ श्रीचारुशीला शशिकला सहजादि सुनिभई बावरी ॥ ॥ २८॥ वर अमल जलसरयू मनोहर विसद पट भूषण लसी ॥ जनुपरा प्रेमा नारि तनधरि आयहरि के उर बसी ॥ कहुँनर्म गणगात रासमण्डल सखि

सखा कहुं मण्डली ॥ कहुं नटत नृत्तत सजिसिंगारन सखासंग लीन्हेअली ॥ २९॥ कोउ क्षण सखा सखि मध्य नृत्तत रामसिय शोभाघनी ॥ बहुहाव भाव विचित्र नाना करिलसत त्रिभुवन धनी ॥ क्षण जनकजा रघुनाथ बहुविधि रामरूप सँवारिकै ॥ मोहने पढ़िकै मंत्रमोहे मनहुं जादूडारिकै ॥ ३० ॥ कोउक्षण सखासखि परस्पर रघुबीर नृत्तत जानकी ॥ यहिभांति रासविलास बहुविधि बरनि कृपानिधानकी ॥ जहँ रहस मण्डलसीयसियपियसखिसखा गतिजानकी ॥ ॥ सुरयक्ष शिवब्रह्मादि की नहिं गति कहांहे आनकी ॥३१॥ गोसखीवेष स्वरूपधरि सिंगार षोडस चारुहैं ते करत हरिअनुकूल कौतुक रासरैन विहारहैं ॥ मन सखिसखा अधिकार यहसुख औरको नहिं दीजिये ॥ गुणमणि सखेरचि रासमण्डल रसिक रसमों पीजिये ॥ ३२॥ दोहा ॥ रहसहेत आलिगण कियो उज्जलबर सिंगार ॥ छविसमुद्र सो किमिलहौं कोटिसुधारस सार ॥ ४९॥ जनकलली छवि अति रली त्रिभुवन को सिंगार ॥ कोटिन रतिशशिछवि निदरि लसत विशद मणिहार ॥ ६०॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने शरद ऋतु प्रथम रास वर्णनं नाम द्वादश स्तरंगः ॥ १२॥

॥ ॥ अथ श्री जानकी नखशिख ॥ रागकाफी ॥

तलरेखा प्रतिविम्ब उमादिक नागरी ॥ पुञ्ज नखत नखज्योति सियाइमि आगरी ॥ अरुण चरण तल मंजुल लाली अतिलसै ॥ कोटिप्रात छविभानु लाल

रगा को हँसे ॥ ५८ ॥ एंड़ी अरुण मनोहर कोहर रंगटेरें ॥ मानहुं प्रेम अनन्त कटोरी बशिकरें ॥ गोरे गुल्फलली के सुखमा मूलहैं ॥ मनमोहन सियपियके अति अनकूल हैं ॥ ६० ॥ मोरवा मंजु विचित्र मनोहर चारहैं ॥ नूपुर छवि मनहरण लसत सिंगारहैं ॥ सियपद अंगुरी मंजुल ललित विराजहीं ॥ मनहुंमदनशरपंच पंच छवि छाजहीं ॥ ६१ ॥ चरण कमल पाम ड़ि सुफूंदा फबिरहे ॥ मानहुं मधुकर लेत सरसरस छवि गहे ॥ कदलि जानु वियरीत रंभदुति करसुधा ॥ गति हंसक की छीनि शब्दहंसक सुधा ॥ ६२ ॥ कटि सूक्ष्म मृगराज जीति अतिखीन है ॥ परसत लाल डेरात शंक आसीन है ॥ कलित अमोलिक मंजु ललित लहंगा फबै ॥ त्रिभुवन कीदुति छीनि कोटि रवि छविदबै ॥ ६३ ॥ रोमावलि जनुधार नाभिसर लौंगई ॥ मनहुं मदन शिवहेत सांगाकर मेलई ॥ त्रिवली तरुण तरंग कोटिरति सोहनी ॥ मनहुं बसीकर मंत्र लसत मनमोहनी ॥ ६४ ॥ कंचुकि चित्रित चारु उरोजन इमिफबै ॥ मनहुं शम्भुधारि त्रानमनोभव सों दबै ॥ हीरजलजमणि हार लालछवि योंलसी ॥ मनहुं शम्भु शिर धार त्रिवेणी दुतिबसी ॥ ६५ ॥ केकी कंठकपोत सुधाबानी सनी ॥ मनहुं सुधाकर कोटि जात सुखमाघनी ॥ पाणिकमल दलमंजु अंगुरियां राजहीं ॥ लखिरति रूपअनूप रमादिक लाजहीं ॥ ॥ ६६ ॥ पहुंची पानसुबाहुं बाजुबंद छविछनी ॥ मनहुं दामिनी कोटिदमकि सुखमाघनी ॥ ठोढ़ी दिव्य

रसाल नीलमणि विंदुहै ॥ जनुसिंगार अनूप लसत बिच इन्दुहै ॥ ६७ ॥ अरुण अधर रतनार मो रहलुद यों पगे ॥ विकसित सीप अनूप मुक्त जनु रतिरंगो ॥ नासा बेसर जलज अधर बिच राजहीं ॥ मनहुँ कीर लै दाड़िम बीजसु साजहीं ॥ ६८ ॥ नासा अमल रसालकीर छवि छीजहै ॥ बेसर मोतीचंचु सुदाड़िम बीजहै ॥ दर्पण दिव्यकपोल लालको मनहरे ॥ मनहुँ शंख छविछीनि अनूपम दुतिधरे ॥ ६९ ॥ श्रुति भूषण रमणीय अनूपम राजहीं ॥ मनहुं मदन दिग विजय चक्रयुग साजहीं ॥ भ्रकुटी कुटिल कमान नैनशर सेलसे ॥ लागे बिन रघुबीर विकल मनमें बसे ॥ ७० ॥ टीका ललित ललाट मेलमणि यों सजे ॥ दिनमणि मनहुँ प्रभात प्रभा लखि कै लजे ॥ गज मुकतादिक लैरे सुपारि कपोलहैं ॥ जनु मरकत मणि लुधे नक्षत्र अमोलहैं ॥ ७१ ॥ मंजुमाँग सिंदूर पूर छवि जागिरही ॥ मनहुं रामकी छविरति सियअति पागिरही ॥ हेमशिखरते बेनी उरबिच योंलसी ॥ युगमहेश के मध्य शेषछवि जनुबसी ॥ ७२ ॥ दिव्य रतन मैं जड़ित चूँदरी अँगा है ॥ अलख अनूपम अद्भुत शोभित रंगहै ॥ सोछवि कोकवि कहै शेष मतिरंग है ॥ होति निरंजन जोति छटा छविपेगहै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ जनक नन्दिनी सुछवि तव कोकवि कहै विसूरि ॥ मनमोहन मनवस किये जो सर्वस छविमूरि ॥ ६२ ॥ ॥ इतिश्री रामरसिक गुणामणि विरचितं जलभूलने शारद अन्तर श्री॰

जनकजा नखशिख वर्णनं नाम त्रयोदश स्तरंगः ॥
॥१३॥ ॥ अथ श्री दशरथ नन्दन नखशिख ॥ राग
काफी ॥ अंकुशादि छवि अरुण चरण तलयों ल-
से ॥ लाल जलज दुति छीनि दामिनी जनहँसे ॥ नख
मणिसरस सोहात अनूपम राजही ॥ कोटिकोटि
शिशुमार चक्र छविलाजही ॥७४॥ कंजकली र-
मणीय अंगुरियां सोहनी ॥ वसीकरण जनुमंत्र अ-
धिक छविमोहनी ॥ मणिगाणा नूपुरदिव्य चरणछ
वियोंलसी ॥ मनहुं श्यामघन मध्य दमकि दामिनि
बसी ॥७५॥ युगलजंघ विपरीत रंभशोभा धरे ॥
मत्तकरी रमणीय हंसगति को हरे ॥ कटिकेहरि मं-
जीर अनूप रसाल की ॥ अमीसरोवर लसत नाभि
सर लालकी ॥७६॥ त्रिभुवन को सिंगार धार रोमा-
वली ॥ लखिदुति राजकुमार सियामोही अली ॥
उर बैजंती लसत चारु वनमाल है ॥ मनहुं परीपरि
वेष तड़ित घनजाल है ॥७७॥ उरश्रीवत्स सोहात
मनोहर मंजुहै ॥ केयूरन अनुराग अनूपम कंजहै
॥ भुजविशाल रमणीय पाणिवर राजहीं ॥ अंगदा-
दि लखिभूषण मनमथ लाजहीं ॥७८॥ कड़ेजड़ा
ऊजड़े सुकंकण छविलसी ॥ रतन अमोलिक लाल
मूंदरी मनवसी ॥ करतल रेख अनूप अरुणता न-
खलसे ॥ मंत्रवसीकर प्रातसुधाकी छविबसे ॥७९॥
कंजकली दलखिलीं अंगुरियां श्यामकी ॥ मनहुं
मोहनीमंत्र लसित मणिदामकी ॥ करसुरली कीध-
रनि वरणि कवि को सके ॥ नटवर वेष अनूप देखि

सियसखि छकै ॥८१॥ कंबुकण्ठ कल अद्भुतग्रीवा लालकी ॥ उपमा किमि कहिजाय निरखि छवि जाल की ॥ तोड़ी विंद रसाल लालकी लसिरही ॥ जनक नन्दिनीदेखिसुमति रतिवसि रही॥८२॥ सुखमयंक विन्दुति बुलाक मुकतालसै ॥ जनु वारिजपै सुधाविन्दु शोभाहँसै ॥ नासा की सरिकरै कौनकेहि रीति सो ॥ नासाकेसम लख्यो नासिका प्रीतिसो ॥ ८२॥ चिक्कनगोल कपोल सदन इति यों लसी ॥ मनहुं मोहनी मंत्र प्रभा पूरण शसी ॥ नैनसैन की मैन कियो घायल घनी ॥ मनहुं कामशर कोटि जीति लीन्हे अनी ॥ ८३॥ भ्रकुटी धनु शरनैन सैन अंजन करे ॥ मनहुं मदन दिग्विजय हेत रोदा धरे ॥ जुलपैं सुमन सुगंध साजि जलयानपै ॥ भई अलीगण सकल देखि कतलानपै ॥ ८४॥ मकराकृत कुण्डलन चारु शोभाधरे ॥ मनो मोहनी डारिमदन मन बसकरे ॥ चर्चित चन्दन तिलक ललित कणिकालसै ॥ मानहुं मुख परिवेष चन्द्र मण्डल हँसै ॥ ८५॥ सेतमुकट शिर सोहत भूपकिशोर के ॥ कोटिचन्द उपमान मन्द भव तोरके ॥ जामा जड़ित जड़ाव सुमणिगण जाल को ॥ मणिगण जोतिविशाल सजेउर माल को ॥ ॥८६॥ देखिपटूक भटूक छटूके उरभये ॥ भूरिभानु शशि जोतिजीति छविकोलये ॥ मोतिन के गजरे दम्पति हिय यों हलैं ॥ जनुमरालगण शुक्रचन्द्र मंडलहलैं ॥ ८७॥ सखासखी गणमध्य लसत सियराम हैं ॥ शरदघटा जनुघिरी दामिनी दाम हैं ॥ दियेयुगल

गालवांह एक संग छवि लसी ॥ जनुतमाल तरुमांह हेमलातिका वसी ॥ ८८॥ दोहा ॥ इमिजोड़ी सरकार सजि कोटिकाम छबिजीति ॥ सुमन सेत कर वर छड़ी लिये रुमाल सप्रीति ॥ ९२॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने श्री रघुनन्दन नखशिख शरद शृंगार वर्णनंनाम चतुर्दश तरंगः ॥ १४॥ ॥ अथ द्वितीयरास ॥ दोहा ॥ कोटिभानु शशि देखिदुति हारि करत मनुहार ॥ मोहनरूप अनूप हरि लाजत कोटिनमार ॥ ९३॥ राग काफी ॥ घनआनंद जलयान विशद बैठक प्रभा ॥ गये सेत सिंगार साजि हरि तेहिसभा ॥ चंद जोति जगमगित परम छवि छाईहो ॥ कोटिचन्द छवि मन्दहोति अधिकाई हो ॥ ८९॥ मनहुं आरती कोटिनरति लै आईहैं ॥ सजिनाचत अलिपुंज बजाय बधाई हैं ॥ सजेसेत जलयान रवाइस छूटहीं ॥ मनहुं सुमन झरिकरें देवसुख लूटहीं ॥ ९०॥ गंजसितारे बाण उड़ेनभ दुतिबसी ॥ शुक्र चहूं दिशि मनहुं चंन्द सुखमा लसी ॥ छकित भये सब मुदित देखि कौशलधनी ॥ दोऊ दिशि सजिखड़े परस्पर छबिघनी ॥ ९१॥ रतन वांसुरी सजी कोटिशशि दुतिहरी ॥ जनु अति ब्रह्मप्रकाश सखासरिव वशिकरी ॥ सियासरिव न तन लस्यो ललन दिशि लषण के ॥ भरत लषण रिपुदवन लख्यो तन सखन के ॥ ९२॥ होनलगो बहु नाट्य विविधि कौतुक जहां ॥ नैनसैन परिहास बैन रसमें तहां ॥ लैबंशी करमधुर मनोहर टेरऊ ॥ मनो

मोहनी मंत्रडारि हरिहेरेऊ ॥९३॥ भयेप्रेम वश स
कल महाछबि जालकी ॥ अद्भुत झांकी देखि ला
ड़िली लाल की ॥ छकित चराचर चकित जकितलखि
माधुरी ॥ चित्रलिखे चहुँओर मनहुं लहिसाधुरी ॥
॥९४॥ दोहा ॥ मणिगण में प्रतिबिंब जनु चहुँदिशि
रास सोहात ॥ लीला अलख समाजवर लिखिन
हिं जात लखात ॥ ९५ ॥ छप्पै ॥ कोटिन रविसम
प्रभा कोटिरति सरिस अमलता ॥ चन्दजोति रबि
जोति कहालखि जोति प्रबलता ॥ कोटिन काम
समान कोटिरवि सुधा माधुरी ॥ युगल रूपछबि
देखि करत उपमा न लाजुरी ॥ गुणमणि आनंद
कन्दघन कैसहु त्रिपित न होत मन ॥ श्रीराज कुंवर
रघुबंशमणि दियोदरश निजजानि प्रान ॥ २ ॥ ५॥
॥ दोहा ॥ शरदसेत सिंगार नट नटवर रूप अनूप ॥
हसनि वसन भूषण लसन असन मदन रति रूप ॥
॥९५॥ शरद चाँदनी रासरचि विशद जान अनुकू
ल ॥ सखासखी सियवर सजे सेत अभूषण फूल
॥९६॥ गुणमणि कीन्ही आरती कृपा युगल दृढ़
धारि ॥ तन मन धन वारयो सकल धनिदोउ रूपनि
हारि ॥९७॥ रामरहस रससिंधु वर लीला छवि सु
खखान ॥ यान जानकी जान है सखासखिन की
प्रान ॥९८॥ ब्रह्मलोक वैकुण्ठ वर हरिपुर कह कै
लाश ॥ सियपिय करत विलास जहँ परम सुखद
सुख रास ॥९९॥ ॥ इतिश्री रामरसिक
गुणमणि विरचितं जलभूलाने शरद ऋतु द्वितीय

रास वर्णनं नाम पंचदशस्तरगः ॥ २५ ॥ ॥ अथ हेमंत ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान ऋतुहेमंत की शोभामहा कोकहि सकैं ॥ वरहेम मय मीना मणिन के काम लखि सुरपति थकैं ॥ चहुँ ओर चन्दन वार चित्रित मणिन खम्भ विराजहीं ॥ ध्वज कलश चित्रित रचित मण्डप विविधि विधि छवि छाजहीं ॥ ३३ ॥ कहि को सकै सामां विवाह विधान छवि मुनिवर छकै ॥ कहुँ कलश कलसे लसे चारु वितान कविनहिं कहि सकै ॥ चहुँ ओर मणिमुकतान की झालर लरैं मनबसि करैं ॥ मणि दीप रविशशि जोति चन्द अनूप की छवि अतिहरैं ॥ ३४ ॥ कोमल बिछौने सजी सेजैं ऊनवसन रसाल हैं ॥ बर अतर आले लहिमसाले मुदित मनसब लाल हैं ॥ सखि गानतान विधान मंगल बाजने बहु बाजहीं ॥ जो निरखि सुरगन्धर्व कन्या हरषि हिय सब लाजहीं ॥ ३५ ॥ वरमधुर मूरति युगलजोड़ी विविधि साज सिंगारि कै ॥ भांवरि भरैं सियपिय परस्पर जातरति पति वारि कै ॥ मणिगण निछावरिहोन लागी अयाचक याचक किये ॥ तहँ मांगि गुणमणि रामसियसो भक्तिवर अनुपम लिये ॥ ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ ऋतुहेमन्त अनन्तसुख सिय हरि भांवरि देत ॥ दुरनि मुरनि सकुचनि हँसनि कसनि चित्त हरि लेत ॥ ७० ॥ मणि मण्डप प्रति बिम्ब लखि चकित छकित नरनारि ॥ झांकी बांकी ब्याह छवि इकटक मुदित निहारि ॥ ७१ ॥

॥ इति श्री रामरसिक गुणामणि विरचितं जल झूलने हेमंत प्रथम विवाह वर्णनंनाम षोडशस्तरंगः ॥१६॥ ॥ दोहा ॥ सरस निशा भोजनकरत दम्पति सहित समाज ॥ आनंद हाँस विलास सुख लखितरसत सुरराज ॥७२॥ रैनसैन जलयान में सकल चैन सामान ॥ निजनिज थलसब जायनित करत सैनसुखदान ॥७३॥ पुनि प्रभात नित्त क्रिया करि भूषण बसन संवारि ॥ सह परिकर रघुवंश मणि हरषे सभा निहारि ॥७४॥ सजिसमाज छठयें दिवस आवत कनक निकेत ॥ करत महा मंगल सकल बटहप्रति तियन समेत ॥७५॥ ॥ ॥ अथ अष्टयाम ॥ दोहा ॥ प्रथम हरश श्री रंगापुनि बंधुसखन सोंनेह ॥ क्रियासाधि गुरुबंदि पुनि जातमात पितु गेह ॥७६॥ भोजन पहर द्वितीय में सुनिबहु तानतरंग ॥ कछुक बेर आराम महरि करत जानकी संग ॥७७॥ यामतीसरे सखन मिलि मेवादिक वर खाय ॥ अश्व गजादिक विहंग तर देखत बाग सोहाय ॥७८॥ चौथे पहर पोशाक सजि सखासखी गणसाथ ॥ बन प्रमोद भरिमोद नित्त जात सिया रघुनाथ ॥७९॥ भूषण बसन संवारि वर सबविधि करि सिंगार ॥ यामपाँचये रामरचि करत रहस्य अपार ॥८०॥ छठेयामहरि कनक बटह प्रविशत सखा सुगेह ॥ विविधि केलि दम्पति करत पूरणासने सनेह ॥८१॥ याम सातयें मंजरी छविसुख शोभा ऐन ॥ लखहिं महासुद युग

लछबि प्रेमपियासे नैन ॥ ८२॥ करकमलन अरुयें पहर कमल नयन पददाबि ॥ गावहिं रोग सोहावने सियाराम छबिपागि ॥ ८३॥ ॥ इति अष्टयाम ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टयाम को ध्यान जनजो करिहैं चित लाय ॥ पराप्रेम सोपाइहैं मंगल मोद बढ़ाय ॥८४ ॥ सुदमंगल सुन्दर महा सोहत जहाँ हमेश ॥ गावत लहत अनन्दकहि सकत न शारद शेष ॥८५॥ रसिकचसक बरधारिहैं सुचिउर माल रसाल ॥ मन वाञ्छित देहैं सदा सुदित लाड़िली लाल ॥८६॥ रामसिया अभिराम पद ताहिलाभ यहि देह ॥ जो रहस्य यहधारिहैं लीला सहित सनेह ॥ ८७ ॥ योग यज्ञ कोटिन करै तनतपि कसै शरीर ॥ राम राम अधिकार बिन मिलैंन श्री रघुबीर ॥ ८८ ॥ चातिक रतिअति घनविषे शशिलखि मुदित चकोर ॥ इमिहरि रसवस न्वितकरैं दरशै युगल किशोर ॥ ८९ ॥ रोलाछन्द ॥ युगल नामसों नेह करै सतसंग रसिकवर ॥ ग्रंथभावना पढ़ै गुणै सुनि नेह ध्यानपर ॥ लखै अखिल परिपूर रामसिय अष्टयाम धन ॥ शिव हनुमत व्यासादि कह्योयह तत्त्व शिरोमणि ॥ ९ ॥ रविमूरति श्रीराम रासयह हृदै प्रकासै ॥ तब साकेत सोहाय सदाहरिसंग विलासै ॥ षोड़श वर्षकिशोर काम कोटिन लखिलाजै ॥ हरिसंग रूपअनूप तेजछबि विभव विराजै ॥ अष्ट पहर हरिसंग रंग आनंद विलासी ॥ रघुवंशी सबनमसखा मंगल छबि राशी ॥ तजिकै जगत असार

तत्व हरिपद मन लावै ॥ गुणमणि लहिसाकेत बहु
रि जग जन्मन पावै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उनइससै एकंस
लखि विक्रम वर्षप्रमाण ॥ आश्विन शुक्ल विजय
सदा दशमी दिनशशि जान ॥ ९० ॥ तेहिदिन सिय
पिय शुभचरित जलभूलन सुखखान ॥ ज्ञानखानि
काशीपुरी गुणमणि कियो बखान ॥ ९१ ॥ सुकवि
जानकी राम मम हनुमत कियो सहाय ॥ रसिकन
हित सुखसिंधु मथि लियोसुधा हरषाय ॥ ९२ ॥ *
॥ ७ ॥ इतिश्री रामरसिक गुणमणि विरचितं
जलभूलने रसिक रहस्य मह अष्टयाम वर्णन नाम
सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥ ॥ रोलाछन्द ॥ संतकृपा
ते प्रथम राजयायो गुरुपाहीं ॥ संतकृपा ते भई प्रीति
सीतावर माहीं ॥ श्री महराज धिराज चक्रवर्ती कुल
जाये ॥ संतगुरु की कृपा मोहिप्रभु सखालखाये ॥
॥ १२ ॥ संतभक्ति ते भये दशों अवतार सोहाये ॥ सं
तकृपा फलचारि मुकटमणि दशरथ पाये ॥ वरणों
तोहि केहिभांति संत करुणानिधि आगर ॥ सन्त
कृपाते कियो ग्रंथपूरो सुखसागर ॥ १३ ॥ ॥ इति
श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने संतप्र
भाव वर्णनो नाम अष्टादश तरंगः ॥ १८ ॥ * ॥

शुभमिती आषाढ़ शुक्लासप्तमी
गुरुवासरे समाप्तिमगात्
शुभमस्तु ॥

हस्ताक्षर महाबीर प्रसाद त्रिपाठी अयोध्या वासी
संवत् ९६ ३६ विक्रम

मात्रा विचारमान शुद्ध पढ़ सके हैं अक्षर शुद्ध कर दिया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	तृषित	तृपित
२	२२	वीज	वोज
३	१२	अमन	हसनि
३	२५	मन्विक	सात्विक
४	२	बिविधि	विविध
४	६	विविधि	विविध
५	२	पुनि	पुनि पुनि
६	४	विविधि	विविध
७	१९	वाजने	बाजडे
७	१०	पंख	पंखि
८	१५	ताल	नार
८	२०	कहे	कहे लहे
९	१८	मुख	मुंकेश
९	२१	लखन	ललन
१०	२०	हर	मनोहरी
११	११	धि	विविध
११	१३	गन	नग
११	१५	पीत	पांत
१०	२०	रोम	रोमा
१२	५	अंग	अनरूप
१२	१८	विचित्र	विचित्रित

तत्व हरिपद मन लावै ॥ गुणमणि लहिसाकेत बहु
रि जग जन्म न पावै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उनइससै एकंस
लखि विक्रम वर्षप्रमाण ॥ आश्विन शुक्ल विजय
सदा दशमी दिनशशि जान ॥ ९० ॥ तेहिदिन सिय
पिय शुभचरित जलभूलन सुखखान ॥ ज्ञानखानि
काशीपुरी गुणमणि कियो बखान ॥ ९१ ॥ सुकवि
जानकी राम मम हनुमत कियो सहाय ॥ रसिकन
हित सुखसिंधु मथि लियोसुधा हरषाय ॥ ९२ ॥ ॥
॥ ७ ॥ इतिश्री रामरसिक गुणमणि विरचितं
जलभूलने रसिक रहस्य सह अष्टयाम वर्णन नाम
सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥ ॥ रोलाछन्द ॥ संतकृपा
ते प्रथम राजपायो गुरुपाहीं ॥ संतकृपा ते भई प्रीति
सीतावर माहीं ॥ श्री महराज धिराज चक्रवर्ती कुल
जाये ॥ संतगुरू की कृपा मोहिप्रभु सखालखाये ॥
॥ १२ ॥ संतभक्तिते भये दशों अवतार सोहाये ॥ सं
तकृपा फलचारि मुकटमणि दशरथ पाये ॥ वरणों
तेहि केहिभांति संत करुणानिधि आगर ॥ सन्त
कृपाते कियो ग्रंथपूरो सुखसागर ॥ १३ ॥ ॥ इति
श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने संतप्र
भाव वर्णनो नाम अष्टादश स्तरंगः ॥ १८ ॥ ॥

शुभमिती आषाढ़ शुक्लासप्तमी
गुरुवासरे समाप्तिमगात्
शुभम्भूयात् ॥

हस्ताक्षर महावीर प्रसाद त्रिपाठी अयोध्या वासी

संवत १९ ३९ विक्रम

मात्रा विचारमान शुद्ध पढ़ सकेहैं अक्षर शुद्ध कर दिया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	तृषित	तृप्ति
२	२२	वीज	वोज
३	१२	असन	हसनि
३	२५	मन्विक	सात्विक
४	२	बिविधि	विविध
४	६	विविधि	विविध
५	२	पुनि	पुनि पुनि
६	४	विविधि	विविध
७	१९	वाजने	बाजहे
७	१०	पंख	पंखि
८	१५	ताल	नार
८	२०	कहे	कहे लहे
९	१८	मुख	मुकेश
९	२२	लखन	ललन
१०	२०	हर	मनोहरि
११	११	धि	विविध
११	१३	गन	नग
११	१५	पीत	पांत
१०	२०	रोम	रोमा
१२	५	अंग	अनरूप
१२	१८	विचित्र	विचित्रित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	८	वन	वनि
१३	२५	गणि	गुनमणि
१५	४	लालमान	मानलाल
१५	५	परिकरि	पकरि पकरि
१६	२३	सेन	लेन
१८	१२	भूलन	भूलन
१८	१५	मणा	अलिगणा
२०	२३	मन	बरसोहहीं
२०	२४	झालरि	झालरैं
२१	४	कि	विसाल
२४	५	राम	रासरूप
२४	५	ने	मोहनी
२६	१८	सेष	सेस
२७	१७	केयूर	कैपूरन
२८	८	सहन	सहज
२९	२१	लस्यो	लख्यो
३०	१०	रवि	रति
३०	१३	प्रान	प्रन
३०	१४	सिंगारनट	बर
३३	२	रोग	राग
३३	१३	श्री	सियरघुबीर
३३	२०	यह	निन्न

बतजवी ज़ श्रीबाबू नन्द किशोर दूबेके ॥

मोहनी मंत्रडारि हरिहेरेऊ ॥ ९३ ॥ भयेप्रेम बश स
कल महाछबि जालकी ॥ अद्भुत झांकी देखि ला
ड़िली लाल की ॥ छकित चराचर चकित जकितलखि
माधुरी ॥ चित्रलिखे चहुँओर मनहुं लहिसाधुरी ॥
॥ ९४ ॥ दोहा ॥ मणिगण में प्रतिबिंब जनु चहुँदिशि
रास सोहात ॥ लीला अलख समाजवर लिखिन
हिं जात लखात ॥ ९४ ॥ छप्पै ॥ कोटिन रविसम
प्रभा कोटिरति सरिस अमलता ॥ चन्दजोति रबि
जोति कहालखि जोति प्रबलता ॥ कोटिन काम
समान कोटिरवि सुधा माधुरी ॥ युगल रूपछबि
देखि करत उपमा न लाजुरी ॥ गुणमणि आनंद
कन्दघन कैसहु त्रिपित न होत मन ॥ श्रीराज कुंवर
रघुबंशमणि दियोदरश निजजानि प्रान ॥ २ ॥ ५० ॥
॥ दोहा ॥ शरदसेत सिंगार नट नटवर रूप अनूप ॥
हसनि वसन भूषण लसन असन मदन रति रूप ॥
॥ ९५ ॥ शरद चाँदनी रासरचि विशद जान अनुकू
ल ॥ सखासखी सियवर सजे सेत अभूषण फूल
॥ ९९ ॥ गुणमणि कीन्ही आरती कृपा युगल दृढ़
धारि ॥ तन मन धन वारयो सकल धनिदोउ रूपनि
हारि ॥ ९७ ॥ रामरहस रससिंधु वर लीला छवि सु
खखान ॥ यान जानकी जान है सखासखिन की
प्रान ॥ ९८ ॥ ब्रह्मलोक वैकुण्ठ वर हरिपुर कह कै
लाश ॥ सियपिय करत विलास जहँ परम सुखद
सुख रास ॥ ९९ ॥ ॥ इतिश्री राम रसिक
गुणमणि विरचितं जलभूलाने शरद ऋतु द्वितीय

रास वर्णनं नाम पंचदशस्तरगः ॥ २५ ॥ २ ॥
॥ अथ हेमंत ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान ऋतुहेमंत
की शोभामहा कोकहि सकैं ॥ वरहेममय मीना-
मणिन के काम लखि सुरपति थकैं ॥ चहुँ ओर च-
न्दन वार चित्रित मणिन खम्भ विराजहीं ॥ ध्वज
कलश चित्रित रचित मण्डप विविधि विधि छवि
छाजहीं ॥ ३३ ॥ कहि को सकै सामां विवाह विधान
छवि मुनिवर छकै ॥ कहुँ कलश कलसे लसे चारु
वितान कविनहिं कहि सकै ॥ चहुँ ओर मणिमुकतान
की झालर लरैं मनबसि करैं ॥ मणि दीप रविशशि
जोति चन्द अनूप की छवि अतिहरैं ॥ ३४ ॥ कोम-
ल बिछौने सजी सेजैं ऊनवसन रसाल हैं ॥
बर अतर आले लाहिमसाले मुदित मनसब लाल
हैं ॥ सखि गानतान विधान मंगल बाजने बहु
बाजहीं ॥ जो निरखि सुरगन्धर्व कन्या हरषि हि-
यसब लाजहीं ॥ ३५ ॥ वरमधुर मूरति युगलजो-
ड़ी विविधि साज सिंगारि कै ॥ भांवरि भरैं सियपिय
परस्पर जातरति पति वारि कै ॥ मणिगण निछा-
वरिहोन लागी अयाचक याचक किये ॥ तहँ मांगि
गुणमणि रामसियसो भक्तिवर अनुपम लिये ॥
॥ ३६ ॥ दोहा ॥ ऋतुहेमन्त अनन्तसुख सिय
हरि भांवरि देत ॥ दुरनि मुरनि सकुचनि हँसनि
कसनि चित्त हरि लेत ॥ ७० ॥ मणि मण्डप प्रति
बिम्ब लखि चकित छकित नरनारि ॥ झांकी
बांकी ब्याह छवि इकटक मुदित निहारि ॥ ७१ ॥

॥ इति श्री रामरसिक गुणामणि विरचितं जल भूलने हेमंत प्रथम विवाह वर्णनंनाम षोडशस्तरंगः ॥१६॥ ॥ दोहा ॥ सरस निशा भोजनकरत दम्पति सहित समाज ॥ आनंद हाँस विलास सुख लखितरसत सुरराज ॥७२॥ रैनसैन जलयान में सकल चैन सामान ॥ निजनिज थलसब आयनित करत सैनसुखदान ॥७३॥ पुनि प्रभात नित्त क्रिया करि भूषण बसन संवारि ॥ सह परिकर रघुवंश मणि हरषे सभा निहारि ॥७४॥ सजिसमाज छठयें दिवस आवत कनक निकेत ॥ करत महा मंगल सकल वटहप्रति तियन समेत ॥७५॥ ॥ ॥ अथ अष्टयाम ॥ दोहा ॥ प्रथम हरश श्री रंगापुनि बंधुसखन सोंनेह ॥ क्रिया साधि गुरुबंदि पुनि जातमात पितु गेह ॥७६॥ भोजन पहर द्वितीय में सुनिबहु तानतरंग ॥ कछुक वेर आराम महरि करत जानकी संग ॥७७॥ यामतीसरे सखन मिलि मेवादिक वर खाय ॥ अश्व गजादिक विहंग तर देखत बाग सोहाय ॥७८॥ चौथे पहर पोशाक सजि सखासखी गणसाथ ॥ बन प्रमोद भरिमोद नित्त जात सिया रघुनाथ ॥७९॥ भूषण बसन संवारि वर सबविधि करि सिंगार ॥ याम पाँचये रामरुचि करत रहस्य अपार ॥८०॥ छठेयामहरि कनक वटह प्रविशत सखा सुगेह ॥ विविधि केलि दम्पति करत पूरण सने सनेह ॥८१॥ याम सातयें मंजरी छविसुख शोभा ऐन ॥ लखहिं महामुद युग

लछबि प्रेमपियासे नैन ॥ ८२॥ करकमलन अरुयें पहर कमल नयन पदद्दाबि ॥ गावहिं रोग सोहावने सियाराम छबियागि ॥ ८३॥ ॥ इति अष्टयाम ॥

॥ दोहा ॥ अष्टयाम को ध्यान जन जो करिहैं चित लाय ॥ पराप्रेम सोपाइहैं मंगल मोद बढ़ाय ॥८४॥ मुदमंगल सुन्दर महा सोहत जहाँ हमेश ॥ गावत लहत अनन्दकहि सकत न शारद शेष ॥८५॥ रसिकचसक बरधारिहैं रुचिउर माल रसाल ॥ मन वाञ्छित देहैं सदा मुदित लाड़िली लाल ॥८६॥ रामसिया अभिराम पद ताहिलाभ यहि देह ॥ जो रहस्य यहधारिहैं लीला सहित सनेह ॥ ८७॥ योग यज्ञ कोटिन करै तनतपि कसै शरीर ॥ राम राम अधिकार बिन मिलैंन श्री रघुबीर ॥ ८८॥ चातिक रतिअति घनविषे शशिलखि मुदित चकोर ॥ इमि हरि रसवस चितकरैं दरशै युगल किशोर ॥ ८९॥ रोलाछन्द ॥ युगल नामसों नेह करै सतसंग रसिकबर ॥ ग्रंथभावना पढ़ै गुणै मुनि नेह ध्यानपर ॥ लखै अखिल परिपूर रामसिय अष्टयाम धन ॥ शिव हनुमत व्यासादि कञ्चोयह तत्त्व शिरोमणि ॥ ९॥ रविमूरति श्रीराम रासयह हृदे प्रकासै ॥ तब साकेत सोहाय सदाहरिसंग विलासै ॥ षोड़श वर्षकिशोर काम कोटिन लखिलाजै ॥ हरिसंग रूपअनूप तेजछबि विभव विराजै ॥ अष्ट पहर हरिसंग रंग आनंद विलासी ॥ रघुवंशी सबं नर्मसखा मंगल छबिराशी ॥ तजिकै जगत असार

तत्व हरिपद मन लावै ॥ गुणमणि लहिसाकेत बहु
रि जग जन्म न पावै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उनइससै एकंस
लखि विक्रम वर्षप्रमाण ॥ आश्विन शुक्ल विजय
सदा दशमी दिनशशि जान ॥ ९० ॥ तेहिदिन सिय
पिय शुभचरित जलभूलन सुखखान ॥ ज्ञानखानि
काशीपुरी गुणमणि कियो बखान ॥ ९१ ॥ सुकवि
जानकी राम मम हनुमत कियो सहाय ॥ रसिकन
हित सुखसिंधु मथि लियोसुधा हरषाय ॥ ९२ ॥ ॥
॥ ७ ॥ इतिश्री रामरसिक गुणमणि विरचितं
जलभूलने रसिक रहस्य सह अष्टयाम वर्णन नाम
सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥ ॥ रोलाछन्द ॥ संतकृपा
ते प्रथम राजपायो गुरुपाहीं ॥ संतकृपा ते भई प्रीति
सीताबर माहीं ॥ श्री महराज धिराज चक्रवर्ती कुल
जाये ॥ संतगुरू की कृपा मोहिप्रभु सखालखाये ॥
॥ १२ ॥ संतभक्तिते भये दशों अवतार सोहाये ॥ सं
तकृपा फलचारि सुकटमणि दशरथ पाये ॥ वरणों
तेहि केहिभांति संत करुणानिधि आगर ॥ सन्त
कृपाते कियो ग्रंथपूरो सुखसागर ॥ १३ ॥ ॥ इति
श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने संतप्र
भाव वर्णनो नाम अष्टादश स्तरंगः ॥ १८ ॥ ॥

शुभमिती आषाढ़ शुक्लासप्तमी
गुरुवासरे समाप्तिमगात्
शुभमभूयात् ॥

इतासार महावीर प्रसाद त्रिपाठी अयोध्या वासी
संवत १९ ३९ विक्रम

मात्रा विचारमान शुद्ध पढ़ सके हैं अक्षर शुद्ध कर दिया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	तृषित	तृपित
२	२२	वीज	वोज
३	१२	असन	हसनि
३	२५	मन्विक	सात्विक
४	२	बिविधि	विविध
४	६	विविधि	विविध
५	२	पुनि	पुनि पुनि
६	४	विविधि	विविध
७	१९	वाजने	बाजहे
७	१०	पंरव	पंखि
८	१५	ताल	नार
८	२०	कहे	कहे लहे
९	१८	मुख	मुकेश
९	२२	लखन	ललन
१०	२०	हर	मनोहरि
११	११	धि	विविध
११	१३	गन	नग
११	१५	पीत	पांत
१०	२०	रोम	रोमा
१२	५	अंग	अनरूप
१२	१८	विचित्र	विचित्रित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	८	वन	वनि
१३	२५	गणि	गुनमणि
१५	४	लालमान	मानलाल
१५	५	परिकरि	पकरि पकरि
१६	२३	सेन	लेन
१८	१२	भूलन	भूलन
१८	१५	मण	अलिगण
२०	२३	मन	बरसोहहीं
२०	२४	झालरि	झालरैं
२१	४	कि	विसाल
२४	५	राम	रासरूप
२४	५	ने	मोहनी
२६	१८	सेष	सेस
२७	१७	केयूर	कैपूरन
२८	८	सहन	सहज
२९	२१	लस्यो	लख्यो
३०	१०	रवि	रति
३०	१३	प्रान	प्रन
३०	१४	सिंगारनट	बर
३३	२	रोग	राग
३३	१३	श्री	सियरघुबीर
३३	२०	यह	निज

सतजवी जश्री बाबू नन्द किशोर दूबेके॥